RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.10 | October 2021 | pp. 98-110
*Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal*

# गाजियाबाद के पुरातात्विक स्थल

डा० कृष्ण कान्त शर्मा

एसोसिऐट प्रोफेसर–इतिहास विभाग, मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद

**Abstract**

*गाजियाबाद जनपद पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण जनपद है ।इस शोध कार्य से पूर्व इस जनपद का पुरातात्विक विश्लेषण नहीं किया गया है। इस पत्र के माध्यम से अनेक नव अन्वेषित स्थलों का पता चला है, जिससे स्पष्ट होता है है कि पुरातत्व की दृष्टि से गाजियाबाद जनपद एक महत्वपूर्ण जनपद है यहां पुरातात्विक सर्वेक्षण की अनेक संभावनाएं है इन स्थलों पर चित्रित धूसर मृदभांड से लेकर मुगल काल तक की संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं अतः यह जनपद लगातार सभ्यताओं के केंद्र में रहा है इस पत्र के माध्यम से जो सर्वेक्षण किया गया है वह प्रारंभिक है आने वाले शोधार्थियों के लिए यह शोध पत्र एक पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा।*

**Keywords:** *गाजियाबाद, पुरातत्व, चित्रित धूसर, पुरातात्विक सर्वेक्षण, पुरातात्विक स्थल, लाल मृदभांड पश्चिमी उत्तर प्रदेश*

**Article Publication**

Published Online: 13-Oct-2021

***Author's Correspondence**

डा० कृष्ण कान्त शर्मा

एसोसिऐट प्रोफेसर–इतिहास विभाग, मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद

kkantsharma[at]gmail.com

*10.31305/rrijm.2021.v06.i10.017*

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

## गाजियाबाद एक परिचय–

गाजियाबाद जनपद उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जनपद है देश की राजधानी दिल्ली से उ०प्र० का प्रवेश द्वार माना जाता है। मुगल शासक अहमदाशाह व आलमगीर द्वितीय के वजीर गाजीउद्दीन ने 1740 ई० गाजीउद्दीनगर की स्थापना की थी और आगे चल कर यही गाजीउद्दीननगर गाजियाबाद के नाम से जाना जाने लगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व यह मेरठ जनपद की एक प्रमुख तहसील था। 14 नवम्बर 1976 को प्रशासनिक दृष्टि से गाजियाबाद जनपद बना।

गाजियाबाद जनपद भारतीय इतिहास की दृष्टि से एक प्रभावशाली जनपद है यहाँ के केसरी टीले से प्राप्त अवशेषों के आधार पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने यहाँ की सभ्यता को 2500 ई०पू० का माना है अतः गाजियाबाद जनपद प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता को अपनी ओर आकृर्षित करने से सफल रहा है। अनुश्रुतियों के अनुसार लोनी या लवणासुर का सम्बन्ध रामायण काल से माना जाता है। इसके अतिरिक्त समुद्रगुप्त के समय का कोट नामक स्थान यहीं माना जाता है। मध्यकाल में भी यह क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण रहा है। स्वतन्त्रता के प्रथम संघर्ष से लेकर 1947 तक स्वतन्त्रता आन्दोलन के गाजियाबाद जनपद की विशेष भूमिका रही है। यहाँ हिण्डन नदी के किनारे 1857 ई० में अंग्रेजी सेना में लोहा लेने का कार्य किया गया था। जिसमें मारे गये अंग्रेजों की कब्र आज भी हिण्डन नदी के समीप विद्यमान है। 1857 ई० की क्रान्ति में सिकरी गांव व मुरादनगर के लोगों का भी अतुल्य योगदान रहा है। जिन्होंने इस क्षेत्र को अंग्रेजों से मुक्त करने का जबरदस्त प्रयास किया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति तक यह क्षेत्र स्वतन्त्रता के अनेक आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से जुटा रहा जो यहां के लोगों के राष्ट्रीय वादी दृष्टि को प्रस्तुत करता है।

गाजियाबाद जनपद का मुख्यालय गाजियाबाद नगर है जो जी०टी० रोड पर अक्षांश 28°40' उत्तर व देशान्तर 77°25' पूर्व में दिल्ली से मात्र 19 किमी की दूरी पर स्थित है। इसके उत्तर में मेरठ जनपद, दक्षिण में बुलन्दशहर व हापुड़ जनपद, पूर्व में ज्योतिबाफूलेनगर व दक्षिण पश्चिम में दिल्ली स्थित है।

## पुरातात्विक स्थल

ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक और पुरातात्विक दृष्टि से गाजियाबाद एक समृद्ध जनपद है। यह जनपद में हुए शोध कार्यों एवं सर्वेक्षण से प्रमाणित हुआ है कि यहाँ 2500 ई० पू० में सभ्यता विकसित थी। इसी आधार पर गाजियाबाद जनपद का पुरातात्विक महत्व को प्राकश में लाने हेतु जनपद में पुरातात्विक सर्वेक्षण किया गया है, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण स्थलों को इस शोध पत्र में उल्लेखित किया जा रहा है।

1. **भनेडा (28.73 अक्षांश, 77.38 देशान्तर)**– गाजियाबाद जनपद के लोनी विकासखण्ड के भनेडा हिण्डन के दांये के किनारे पर अवस्थित है, यह सम्पूर्ण गांव एक टीले पर स्थित है। गांव के पूर्वी भाग का टीला जो हिण्डन के साथ लगा है, इसका एक भाग लम्बवत कटा हुआ है। लम्बवत कटे टीले में लगभग 10 फिट पर चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के पात्र व उसी स्तर से पशुओं हड्डियाँ प्राप्त हुई है। जिसे लैब में भेजा गया है टीले के इसी स्तर से ईंट भी प्राप्त हुई है जिनकी माप 23X 23X9 सेमी0 है। जिसके ऊपर अंगुलियों के निशान अंकित है जिस प्रकार प्राचीन ईंट में होते थे। इसके अतिरिक्त लाल रंग के मृद्भाण्डों के बड़े पात्रों के अवशेष प्राप्त हुए है। अतः यह टीला दोआब का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। इस सर्वेक्षण से पूर्व यह प्रकाश में नहीं आया था।

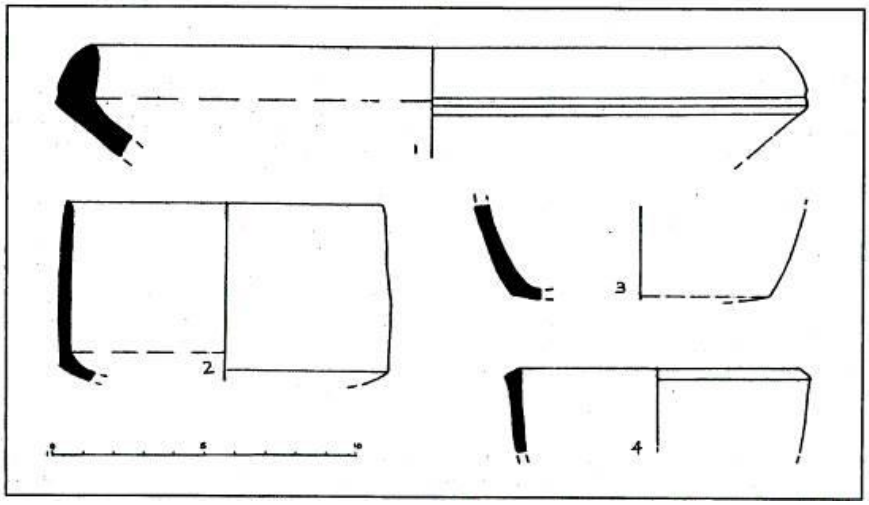


**चित्र संख्या – 1–अ, खुर्द भनेडा की मृद्भाण्ड आकृति**

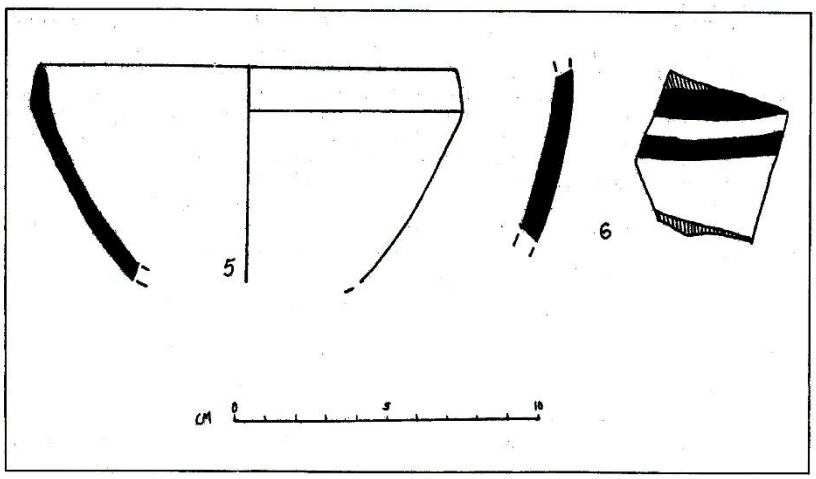


**चित्र संख्या – 1–ब, खुर्द भनेडा की मृद्भाण्ड आकृति**

2. **भूपखेडी (28.76 अक्षांश 77.38 देशान्तर)–** यह गाजियाबाद जनपद के लोनी विकासखण्ड में फर्रूखनगर से रटौल मार्ग पर स्थित है। मोदीनगर से इसकी दूरी लगभग 46 किमी0 हे। यह हिण्डन के दांये किनारे पर अवस्थित है। इस गांव से चित्रित धूसर मृद्भाण्डों के अवशेष प्राप्त हुए हैं अतः यह गांव भी एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। सर्वेक्षण से पूर्व यह स्थल प्रकाश में नहीं आया था।
3. **फर्रूखनगर–(28°43′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद में अवस्थित है मुगल शासक फर्रूखशियर के नाम पर इसका नाम फर्रूखनगर रखा गया। यहां पर मध्यकालीन मस्जिद व इमारते हैं। यह हिण्डन नदी के दाँये किनारे पर है।
4. **गोकुलपुर–(28°43′ अक्षांश, 77°17′ देशान्तर)** – यह यमुना नदी के किनारे अवस्थित है। यहां पर लखौरी ईंटों का कुँआं है।
5. **गुना–(28°47′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद में अवस्थित है। यहां पर एक पलटा हुआ खेड़ा है, जिस पर एक टीला है जो कि लगभग 35 मीटर लम्बा, 25 मीटर चौड़ा तथा 3 मीटर ऊँचा है। टीले पर पीर की मजार भी है।
6. **हरसिया (28°52' अक्षांश, 77°24' देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद एवं बागपत की सीमा पर हिण्डन नदी के दायें किनारे पर गाजियाबाद से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हिण्डन द्वारा यहां का टीला काट दिया गया है। यहाँ के ग्रामीणों ने बताया कि यहाँ अकसर बड़े आकार की ईंटें प्राप्त होती रही हैं। अतः यह प्राचीन पुरातात्विक स्थल है।
7. **हटेवा (28°45' अक्षांश, 77°22' देशान्तर)** – यह सीती टीले से 1.5 किमी की दूरी पर हिन्डन के दाये किनारे, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में अवस्थित एक टीला है। यह हिन्डन नदी से 500 मीटर की दूरी पर स्थित है। इसके पास सिरोरा गांव अवस्थित है। जो कि टीले से 500 मीटर की दूरी मात्र पर है। हटेवा टीले पर पहुँचने के लिए फर्रूखनगर – चिरोडी मार्ग से जाते हुए महमूदपुर, रिस्तल, भूपखेडी तथा सीती के बाद हटेवा टीला आता है। हटेवा टीले पर जाने हेतु भूपखेडी से 500 मीटर की दूरी पर कच्चा सड़क है। इस टीले की लम्बाई लगभग 26 मीटर, चौड़ाई 15 मीटर व ऊँचाई 3 मीटर है।

स्थानीय निवासियों के अनुसार 100–150 वर्ष पूर्व यहाँ यह गाँव अवस्थित था, जिसकी जनसंख्या यादव बहुल थी। हिण्डन नदी में बाढ़ आने पर यह गाँव नष्ट–भ्रष्ट हो गया। स्थानीय निवासियों के अनुसार यहाँ से ईटे प्राप्त हुई है। सर्वेक्षण के दौरान यहाँ से गुप्त, उत्तर गुप्त तथा मध्यकालीन मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है, जो निम्नलिखित है–

1. लाल बर्तन का जार, गुप्त तथा उत्तर गुप्त कालीन।
2. कटोरा, गुप्त व उत्तर गुप्त कालीन।
3. काल मृद्भाण्ड, मध्यकालीन।
4. लाल मृद्भाण्ड, मध्यकालीन।

इस टीला पर पीर की मजार भी है यह टीला वर्तमान में कृषि कार्य के कारण विलुप्त प्राय है।

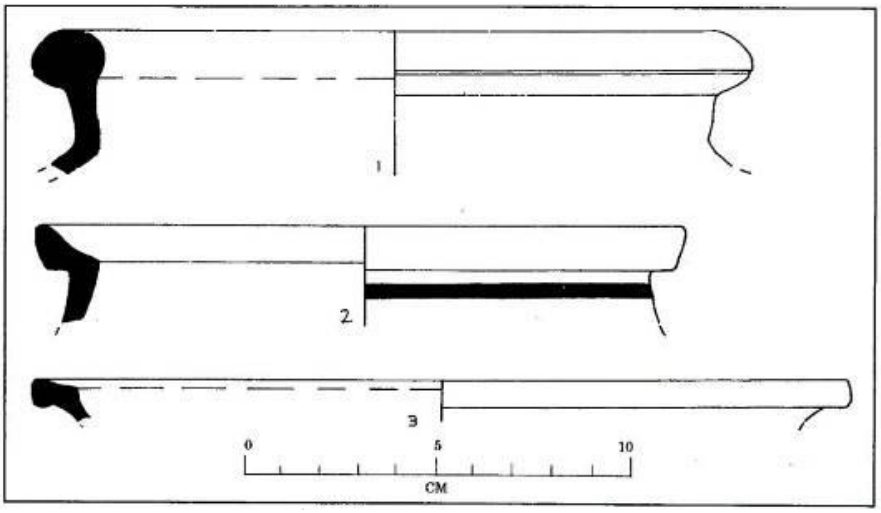


**चित्र संख्या – 2–अ, हटेवा की मृद्भाण्ड आकृति**

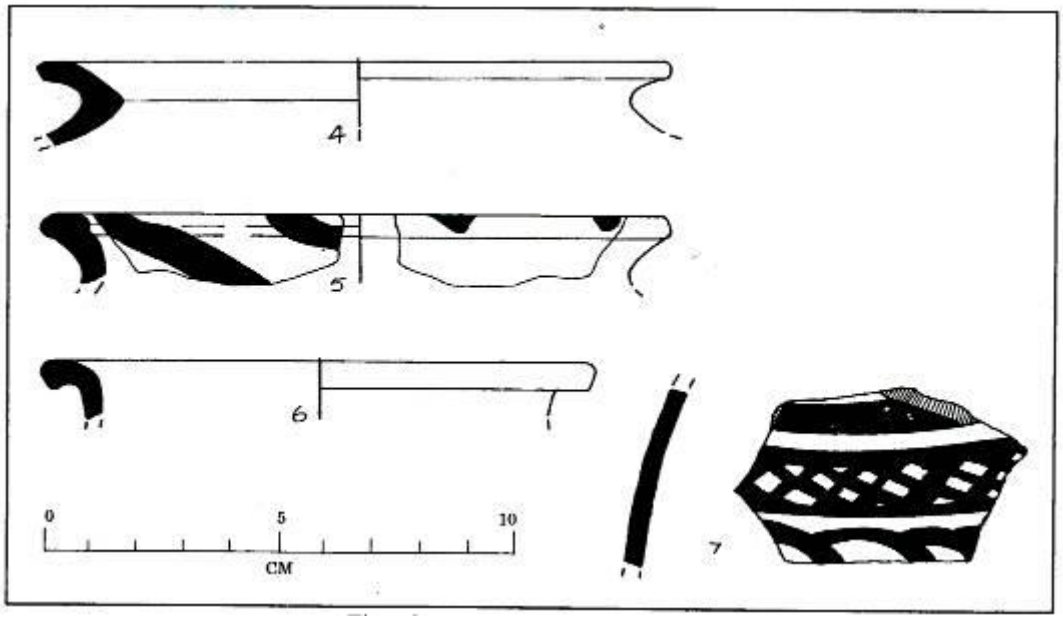


चित्र संख्या – 2–ब, हटेवा की मृद्भाण्ड आकृति

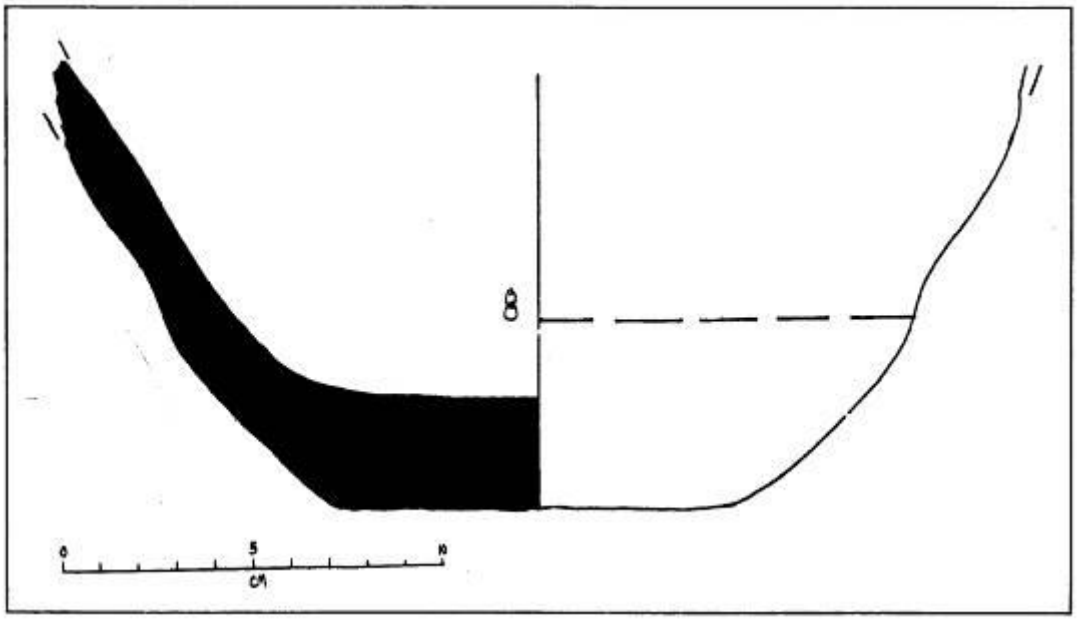


चित्र संख्या – 2–स, हटेवा की मृद्भाण्ड आकृति

8. **जगौला–(28°41′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – जगौला गाजियाबाद जनपद में हिण्डन नदी के दांये किनारे पर स्थित है। यहाँ गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा पुरातात्विक टीले को लगभग समाप्त कर दिया गया है, परन्तु फिर भी पुरातात्विक अवशेष यहाँ प्राप्त होते हैं। इनमें मुख्य रूप से मध्य काल के लाल रंग के मृद्भाण्ड है।

9. **कुम्हेरा–(28°44′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – यह हिन्डन नदी के दायें किनारे पर जनपद गाजियाबाद में अवस्थित है। यहाँ पर एक टीला जो लगभग 22 मीटर लम्बा, 18 मीटर चौड़ा तथा 5 मीटर ऊँचा है। यहाँ पर मुगलकालीन अवशेष मिले हैं।

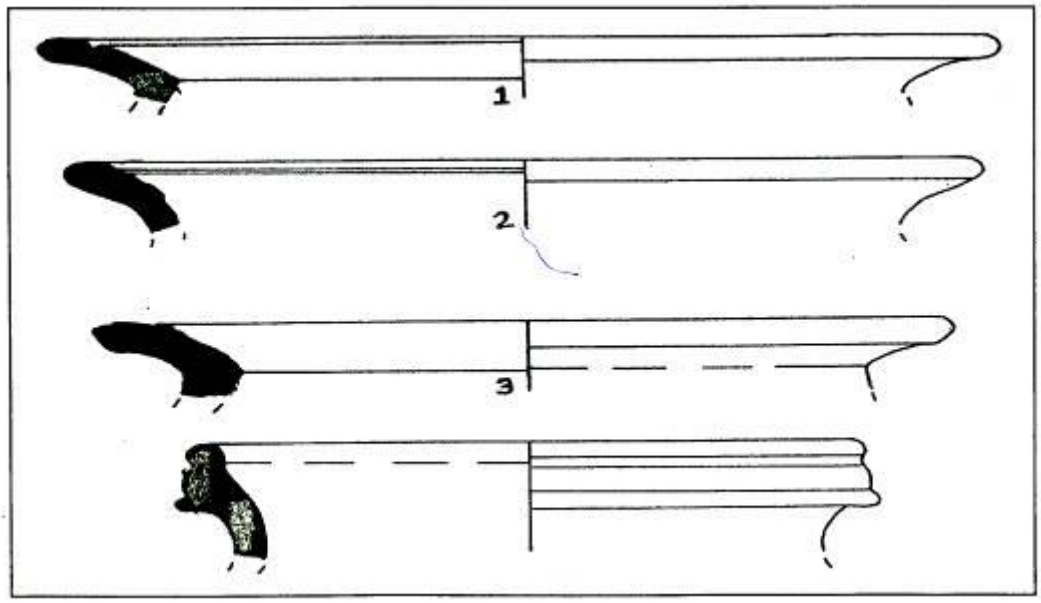


**चित्र संख्या – 3, कुम्हेरा की मृद्भाण्ड आकृति**

10. **कसेरी–(28°41′ अक्षांश, 77°24′ देशान्तर)** – कसेरी गाजियाबाद जनपद में हिण्डन नदी के दांये किनारे पर मोहननगर से उत्तर की ओर 2 किलोमीटर पर स्थित है। यहाँ स्थित पुरातात्विक टीले को किसानों द्वारा लगातार क्षति पहुँचायी जा रही है। ये टीला 200 मीटर लम्बा और 100 मीटर चौड़ा है। इसकी ऊँचाई 15–20 मीटर है। ग्रामीणों की मान्यता है कि केसर सिंह ने इस गांव को बसाया था। इस कारण इस गांव का नाम केसरी पड़ा। यहां पर ओ.सी.पी., चित्रित धूसर मृद्भाण्ड, एन.बी.पी., गुप्त, उत्तर गुप्त और मध्य काल की पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं।

11. **लोनी–(28°45′ अक्षांश, 77°17′ देशान्तर)** – यह यमुना नदी के बायें किनारे पर शाहदरा–सहारनपुर रोड पर अवस्थित कस्बा है। संस्कृत में लवन तथा हिन्दी में लोन का संगम लोनी कहलाया, जो कि नमकीन प्रदेश के रूप में पहचाना गया। यहाँ पर 1931 में ए०एस०ई० के अधीन सी०एल० सूरी तथा डी० आर० मणि ने आई० के० देसाई तथा अश्विनी अस्थाना के साथ खुदाई की। इस टीले की लम्बाई 200 मीटर, चौड़ाई 100 मीटर तथा ऊँचाई 10 मीटर है।

वर्तमान में यह टीला दुकानों एवं मकानों से ढक दिया गया है। टीले के पीछे ऑटो गैराज खुला है। यहां पर व्यापार–वाणिज्य तीव्र गति से हो रहा है। यहाँ से पी० जी० डब्ल्यू० लाल मृद्भाण्ड आदि प्राप्त हुए हैं। स्थानीय निवासियों के अनुसार टीले की खुदाई के समय यहाँ से बर्तन व हड्डियों प्राप्त हुई है। कुछ व्यक्तियों ने बताया कि इस टीले से स्वर्ण एवं जारी आभूषण भी प्राप्त हुए है। यद्यपि उन्होंने इसका विस्तृत वर्णन नहीं किया। इसके सतह से गुप्त, उत्तर गुप्त तथा मध्यकालीन मृद्भाण्ड भी प्राप्त हुए है।

लोनी का टीला पृथ्वीराज चौहान के समय (1191 A. D. ) से था। यहाँ पर मुहम्मद–बिन–साम के गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने आक्रमण किया, उस समय यहाँ का राजा नुनकरण था। तैमूर ने इस किले पर आक्रमण कर इसे पूर्णतः नष्ट कर दिया। मुगल काल में इसने फिर से गौरव प्राप्त किया। पठानों ने इसे मुगलों से स्वतन्त्र कराया। तैमूर के आक्रमणों के प्रारम्भिक दौर जो क्रमशः कैथल व पानीपत में हुए, के बाद तैमूर ने लोनी होते हुए दिल्ली पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

बहलोल लोदी के समय यह उसके सम्राज्य के पश्चिमी सीमा थी। बाबर ने पानीपत के युद्ध के पश्चात इसे अपने अधिकार में कर लिया।

लोनी यमुना नदी के किनारे होने के कारण यहाँ पर प्राचीन तथा मध्यकाल में पानी की समुचित व्यवस्था रही होगी। चूँकि लोनी दिल्ली से सटा है, तो व्यापार वाणिज्य में भी इसने समृद्धता प्राप्त कर ली है। यहाँ से एक हॉडी,

लाल मृद्भाण्ड, हल्की लाल ईटें, पी०जी० डब्ल्यू. (पूर्व इतिहास कालीन) गेरूवर्णी कटोरा (गुप्त कालीन) आदि प्राप्त हुए है।

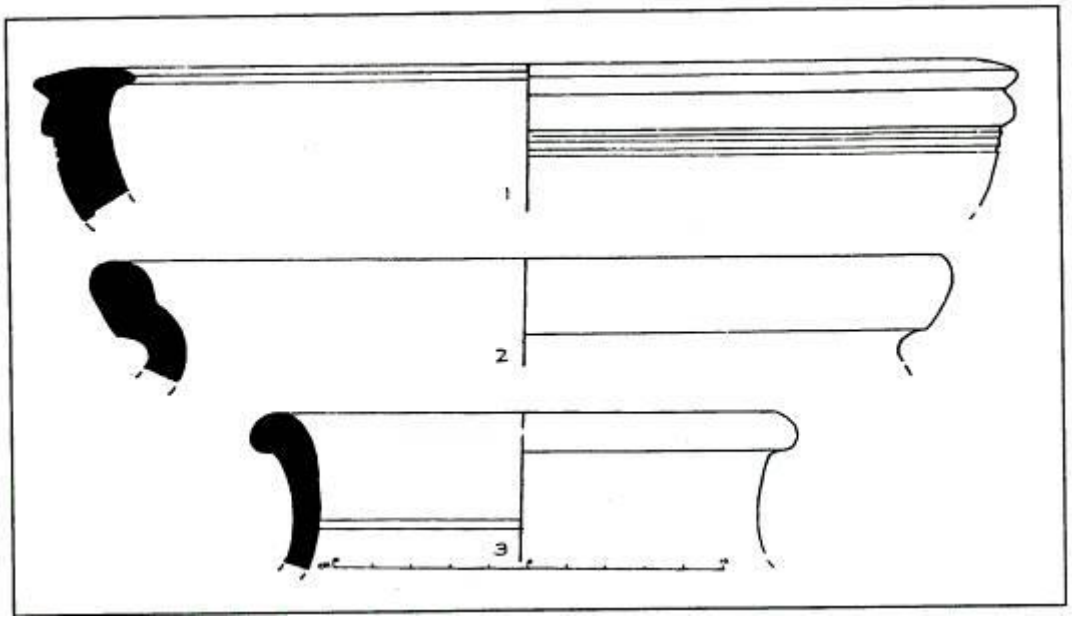


**चित्र संख्या – 4–अ, लोनी की मृद्भाण्ड आकृति**

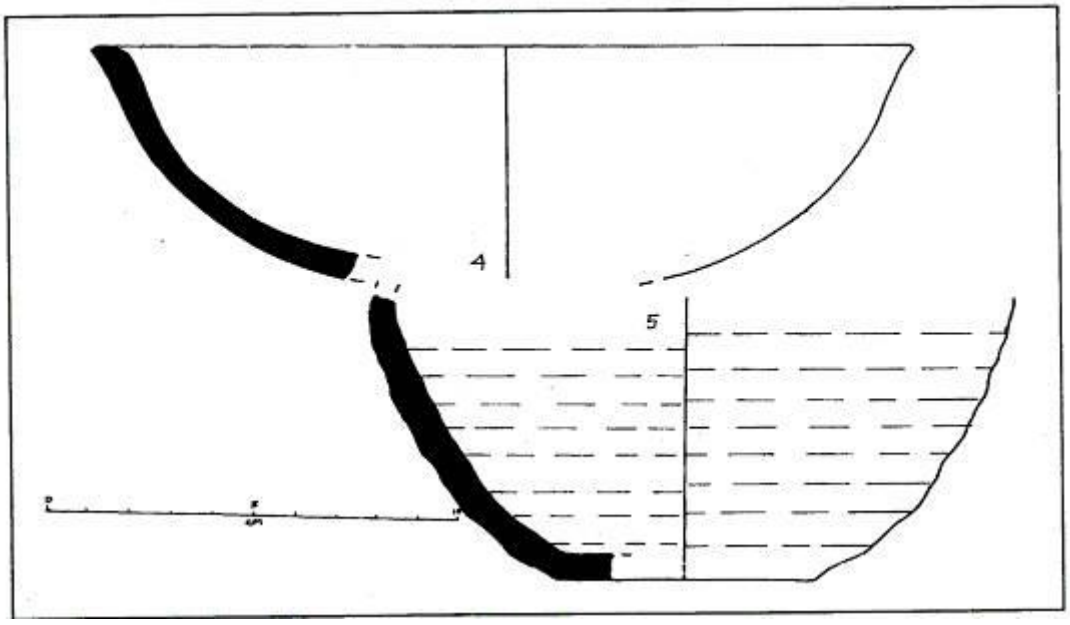


**चित्र संख्या – 4–ब, लोनी की मृद्भाण्ड आकृति**

12. **मंडोली (28º42' अक्षांश, 77º18" देशान्तर)** – मण्डोली यमुना के बांये किनारे पर नन्द नगरी में दिल्ली गाजियााबद मार्ग पर स्थित है। यहाँ टीले की ऊँचाई दो से तीन मीटर है और लम्बाई 25 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है। यहाँ ग्रामीणों ने बताया कि मण्डोली को मण्डव गढ़ कहा जाता था और यहाँ राजपूतों का निवास था जो राजस्थान के चित्तौड़ गढ़ से सम्बन्धित थे। मध्य काल में राजपूतों और हरिजनों को यहां से पश्चिम दिशा में मुसलमानों हटा दिया और वे सबोली गांव में बस गये। दिल्ली पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1987–88 व 1988–89 में बी.एस.आर. बाबू के नेतृत्व में उत्खन्न कराया गया और यहाँ से उत्तर हड़प्पा काल चित्रित धूसर मृदभाण्ड, गुप्त, शुंग–कुषाण के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

13. **मंडोला (28º44' अक्षांश, 77º71" देशान्तर)** – जनपद गाजियाबाद में यमुना के दायें किनारे पर शाहदरा सहारनपुर मार्ग के बायें ओर अवस्थित है। यह लोनी से 7 किमी० की दूरी पर है। गांव में एक बड़ा टीला है, जो

लगभग 300 मीटर लम्बा, 400 मीटर लम्बा चौड़ा तथा 18 मीटर ऊँचा है। यह टीला गृह निर्माण हेतु क्षतिग्रस्त किया जा रहा है। इस पर गृह निर्माण कार्य हो रहा है।

अनुश्रुतियों के अनुसार यहाँ ऋषि मांडलिक का आश्रम था, उन्हीं के नाम पर इस गाँव का नाम मंडोला पड़ा। जब राम ने अपने भाई शत्रुघन को लवणासुर का वध करने हेतु भेजा तो उसे ऋषि माण्डलिक से भेंट करने हेतु आश्रम जाने को भी कहा था। ब्रिटिश काल में यह गढ़ी मंडोला के नाम से जाना जाता था। यह गाँव तैमूर के आक्रमण से भी प्रभावित हुआ, इससे पूर्व गुप्त काल में गुप्तों ने हूणों से इस क्षेत्र में युद्ध भी किया। मण्डौला गाँव से एक टेरीकोटा बीड, टेरीकोटा बॉल, खिलौने के आकार की एक मिट्टी की मुर्गा, पी०जी० डब्ल्यू व ऐतिहासिक काल के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है।

यहाँ से प्राप्त प्रमुख मृद्भाण्ड निम्नलिखित हैः–

1. चित्रित धूसर मृद्भाण्ड। यह अन्दर से काली पॉलिस से युक्त व बाहर से साफ है।
2. धूसर मृद्भाण्ड का एक कटोरा, पी०जी०डब्ल्यू से सम्बन्धित।
3. लाल मृद्भाण्ड कटोरा।
4. लाल मृद्भाण्ड गुप्त कालीन।

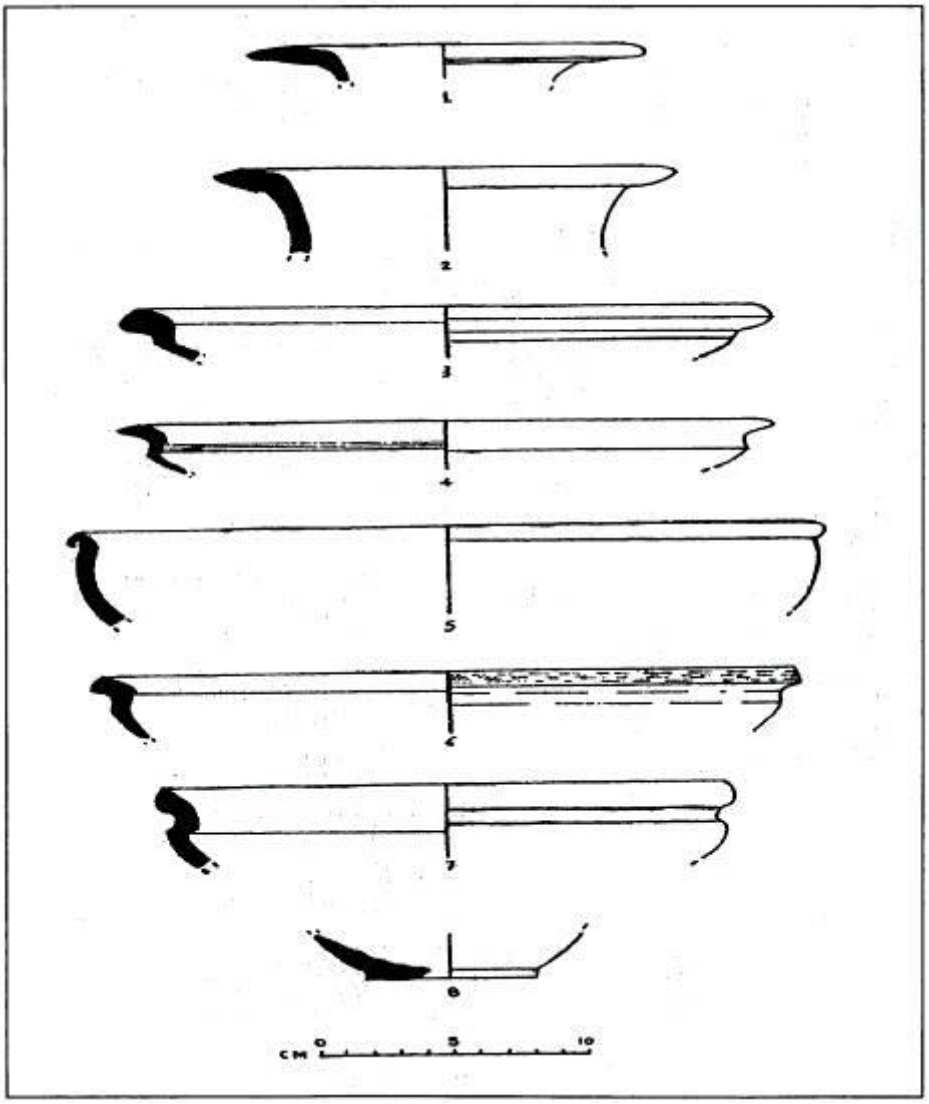


**चित्र संख्या – 5–अ, मण्डोला की मृद्भाण्ड आकृति**

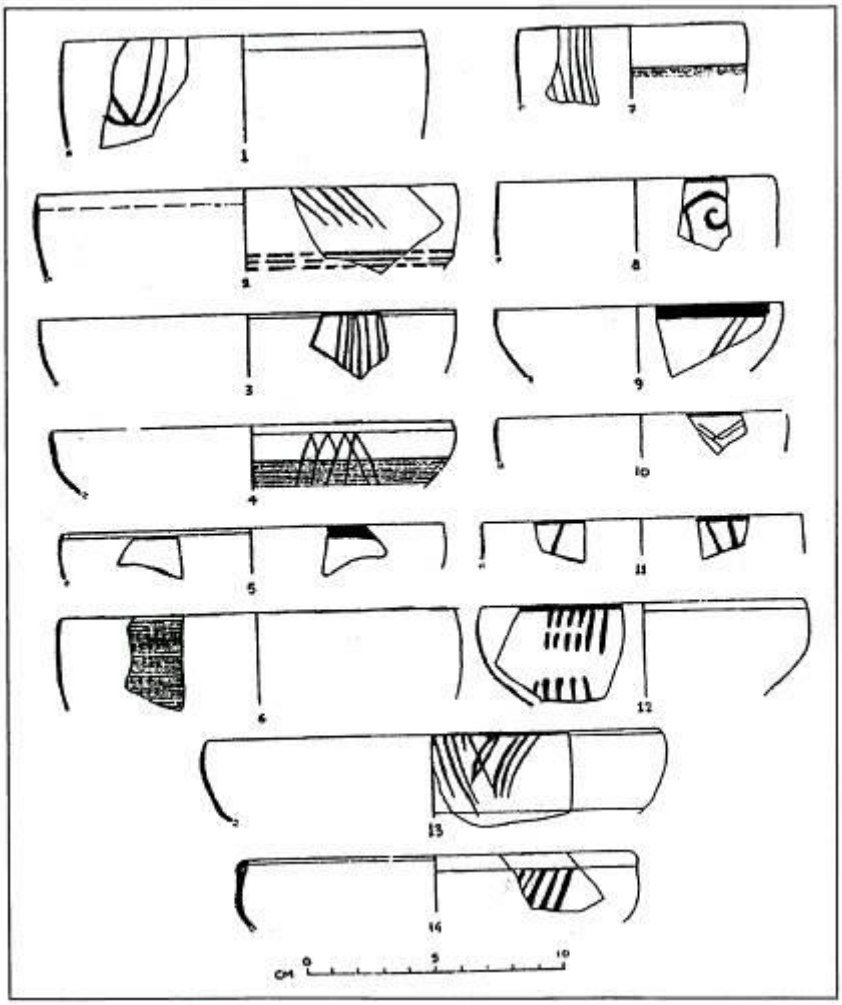

चित्र संख्या – 5–ब, मण्डोला की मृद्भाण्ड आकृति

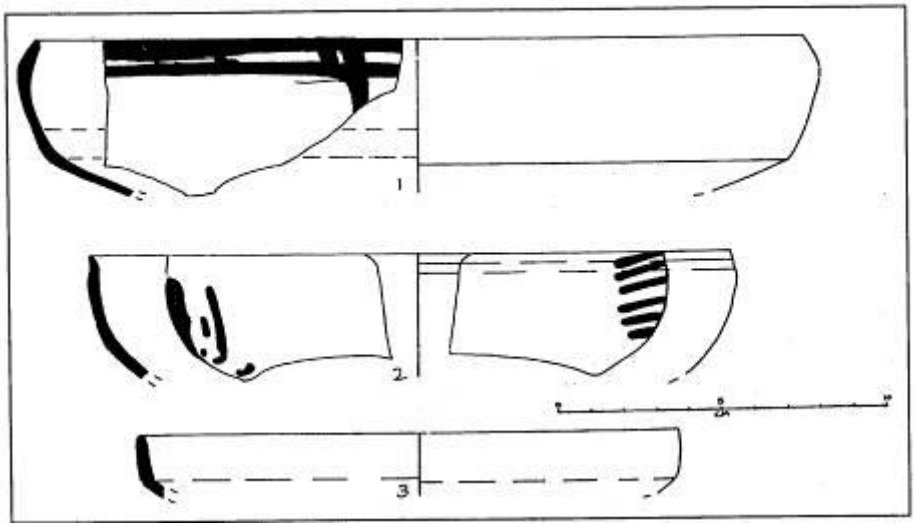

चित्र संख्या – 6–अ, मण्डोला की मृद्भाण्ड आकृति

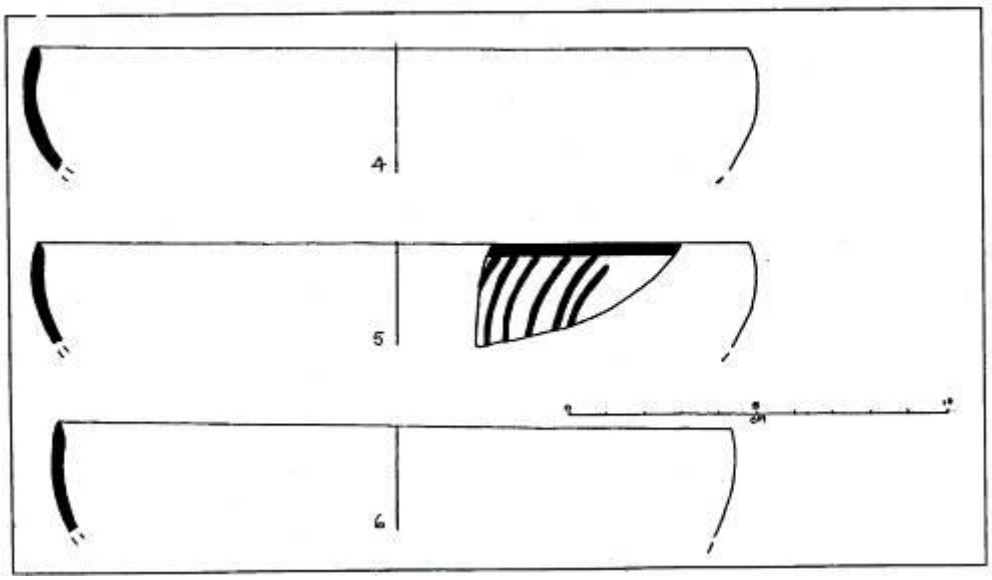


**चित्र संख्या – 6–ब, मण्डोला की मृद्भाण्ड आकृति**

14. **मेहरामपुर–(28°53′ अक्षांश, 77°22 देशान्तर)** – यह गांव जनपद गाजियाबाद में अवस्थित है। यह यमुना व हिण्डन के मध्य में अवस्थित है। यहां पर एक छोटा जो लगभग टीला 12 मीटर लम्बा, 10 मीटर चौड़ा तथा 2.5 मीटर ऊँचा है। यहां से मध्यकालीन मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं।

15. **पसुन्डा–(28°42′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद में अवस्थित है, यहाँ से मध्यकालीन मस्जिद तथा इमारते मिली है। यहाँ हिण्डन–यमुना दोआब के केन्द्र से दूर अवस्थित है।

16. **रिस्तल (28.75 अक्षांश, 77.36 देशान्तर)**– यह गाजियाबाद जनपद के लोनी विकासखण्ड में अवस्थित है। यह फर्रूखनगर से रटौल मार्ग पर अवस्थित है। मोदीनगर से इसकी दूरी 45 किमी0 है। यह हिण्डन के दांये किनारे पर अवस्थित है। यहां से कोई भी पुरातात्विक अवशेष प्राप्त नहीं हुआ है।

17. **रानप– (28°44′ अक्षांश, 77°18′ देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद के लोनी से 4 किमी की दूरी पर अवस्थित है। यहाँ अनेक मध्यकालीन ईमारतें हैं यह मध्यकाल में मुगलों का शिकारगाह रहा है।

18. **सुठारी (28.87 अक्षांश, 77.42 देशान्तर)**– सुठारी गाजियाबाद जनपद के मोदीनगर तहसील से 23 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम में अवस्थित है। सुठारी गांव हिण्डन नदी के बांये किनारे पर है। यद्यपि यह गांव अध्ययन क्षेत्र यमुना–हिण्डन दोआब के बाहर स्थित है परन्तु पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण यहां पर प्रारम्भिक सर्वेक्षण किया गया जिसमें यहां पर दो टीले प्राप्त हुए है। प्रथम टीला जो कि सुठारी गांव के उत्तर पश्चिम में अवस्थित है, से सर्वेक्षण के दौरान उत्तर हडप्पाकालीन मृद्भाण्ड, कुषाणकालीन मृद्भाण्ड, मिट्टी का कटोरा एवं अन्य ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हुई है। इस टीले का क्षेत्रफल 2 हैक्टेअर है। दूसरे टीला भी महत्वपूर्ण है इससे चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के अवशेष प्राप्त हुए है। अतः एक ही गांव में दो महत्वपूर्ण टीले है जो कि एक उत्तर हडप्पाकालीन व दूसरा चित्रित धूसर मृद्भाण्डकालीन से सम्बन्धित है। अतः यह दोआब उत्तर हडप्पा काल व चित्रित धूसर संस्कृति के सम्बन्धों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हमारे सर्वेक्षण के पश्चात भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की टीम ने इस क्षेत्र का दौरा किया व अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। (दिनांक 31.01.2014 को अमर उजाला में प्रकाशित)

19. **शमशेरपुर (28.74 अक्षांश, 77.40 देशान्तर)**– यह गाजियाबद जनपद में लोनी विकासखण्ड में स्थित है। मोदीपुर से इसकी दूरी 35 किमी है। गांव हिण्डन–यमुना दोआब के बाहर है एवं हिण्डन के बांयें छोर पर अवस्थित है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण होने के कारण इसलिए इसका सर्वेक्षण कार्य किया गया। सर्वेक्षण के दौरान यहां पर एक उत्तर मुगलकालीन द्वार मिला है साथ यहां से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जो देवनागरी लिपि में है। जिसे स्कैनिंग के बाद पढ़ लिया जायेगा। ग्रामीण अनुश्रुति के अनुसार गांव के मनसा सेठ के यहां पर

जूनागढ़ के नरसिंह ने भात भरा था जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने सोने की बारिश की थी। अतः यह गांव पुरातात्विक व अनुश्रुतियों के अनुसार इतिहास व संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

20. **सिरोरा सलेमपुर (28.77 / 77.40)–** यह गाजियाबाद जनपद के लोनी विकासखण्ड में फर्रूखनगर से रटौल मार्ग पर स्थित है मोदीनगर से इसकी दूरी लगभग 48 किमी0 है। यह हिण्डन के दांये किनारे पर अवस्थित है। इस गांव से एक प्राचीन मंदिन एवं लगभग 170 साल पुरानी हवेली मिली है। जो आज भी संरक्षित है। यहाँ के टीले का आकार 1 हेक्टेयर व मोटाई 2 मीटर है। यहाँ से लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है। वर्तमान में यहाँ पर आवासीय बस्ती है।

21. **सीती–(28°45′ अक्षांश, 77°22′ देशान्तर) –** यह हिण्डन नदी के दॉये किनारे पर अवस्थित है इस गाँव के अधिकांश लोग दिल्ली, गाजियाबाद को प्रवास कर चुके हैं। यहाँ की जनसंख्या मात्र 500 के आसपास है। हिण्डन के किनारे होने के कारण यह बाढ़ प्रभावित भी रहा है। यहाँ पर एक टीला है, जो 75 मीटर लम्बा 90 मीटर चौड़ा तथा 3.5 मीटर ऊँचा है।

वर्तमान में यह टीला गृह निर्माण हेतु प्रयोग किया जा रहा है। यहाँ से डिशऑन– स्टैण्ड, उत्तरी हड़प्पा मृद्भाण्ड, एन० बी० पी०, गुप्त, उत्तर गुप्त तथा मध्यकालीन मृद्भाण्ड प्राप्त हुई है। यहाँ से एक टेरीकोटा बीड भी प्राप्त हुआ है, जो कि हस्तिनापुर के बीड से समानता रखता है। टीले की सतह से एक उत्तर हड़प्पा–कालीन ईंट प्राप्त हुई तथा पी०जी०डब्ल्यू० की भी प्राप्ति हुई है। इसके अलावा यहाँ से निम्न मृद्भाण्ड मिले हैं।

1. लाल मृद्भाण्ड पूर्व इतिहास कालीन
2. डिश – ऑन स्टैण्ड, उत्तर हड़प्पा कालीन।
3. डार्क ग्रे वेयर, एन बी पी से सम्बन्धित।
4. चित्रित लाल मृद्भाण्ड, कुषाण– गुप्त कालीन।
5. लाल गेरूवर्णी ईंट, गुप्त व उत्तर गुप्त कालीन।
6. लाल मृद्भाण्ड, गुप्त कालीन।
7. चमकीले लाल मृद्भाण्ड, कुषाण कालीन।

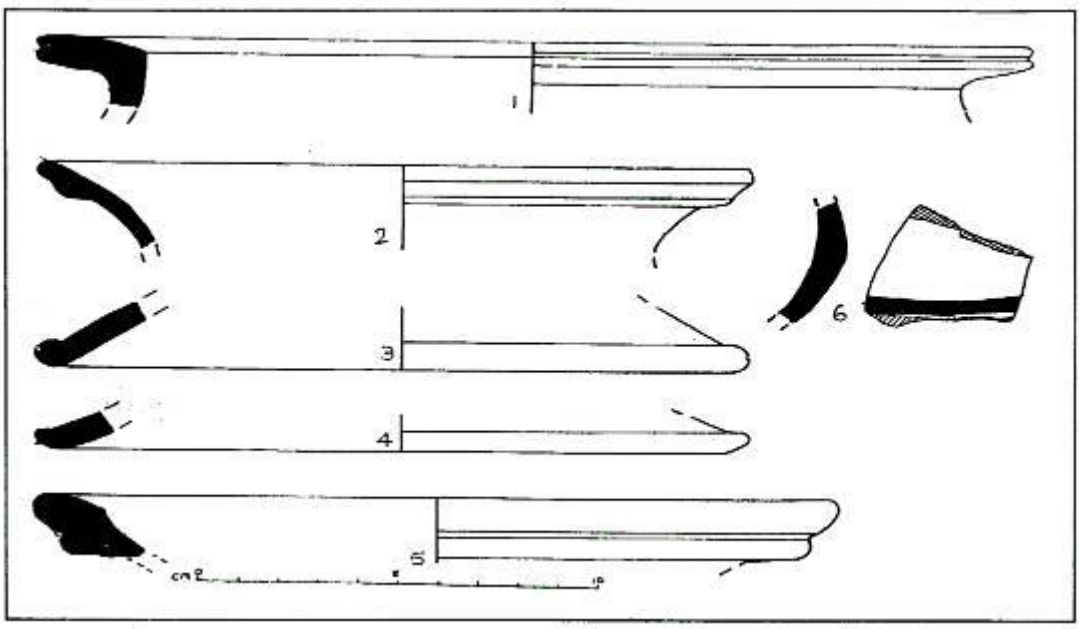


**चित्र संख्या – 7–अ, सीति की मृद्भाण्ड आकृति**

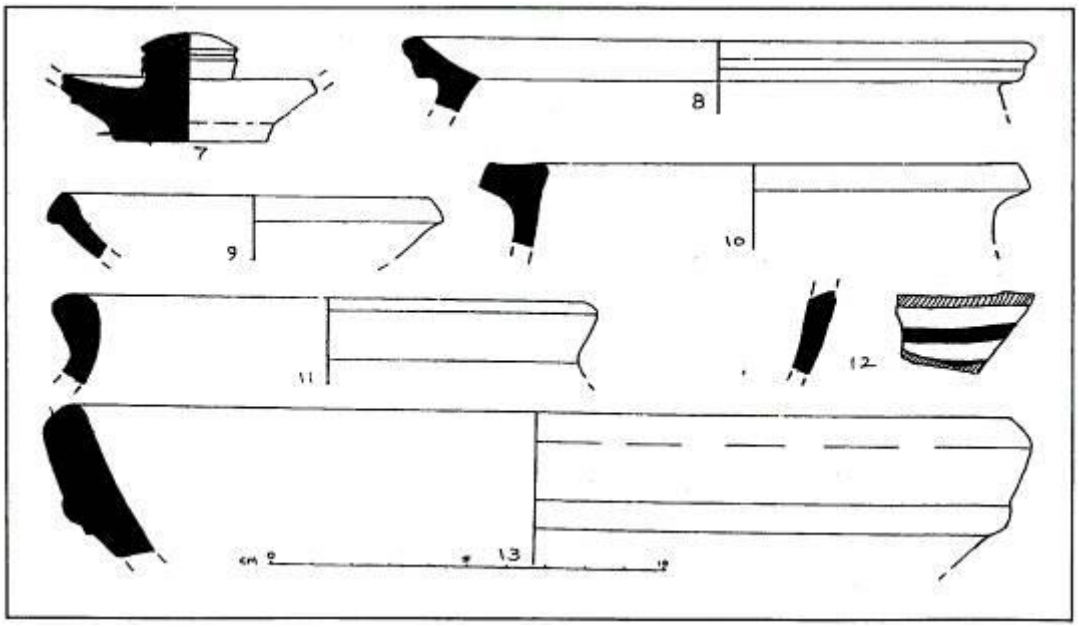


चित्र संख्या – 7–ब, सीति की मृद्भाण्ड आकृति

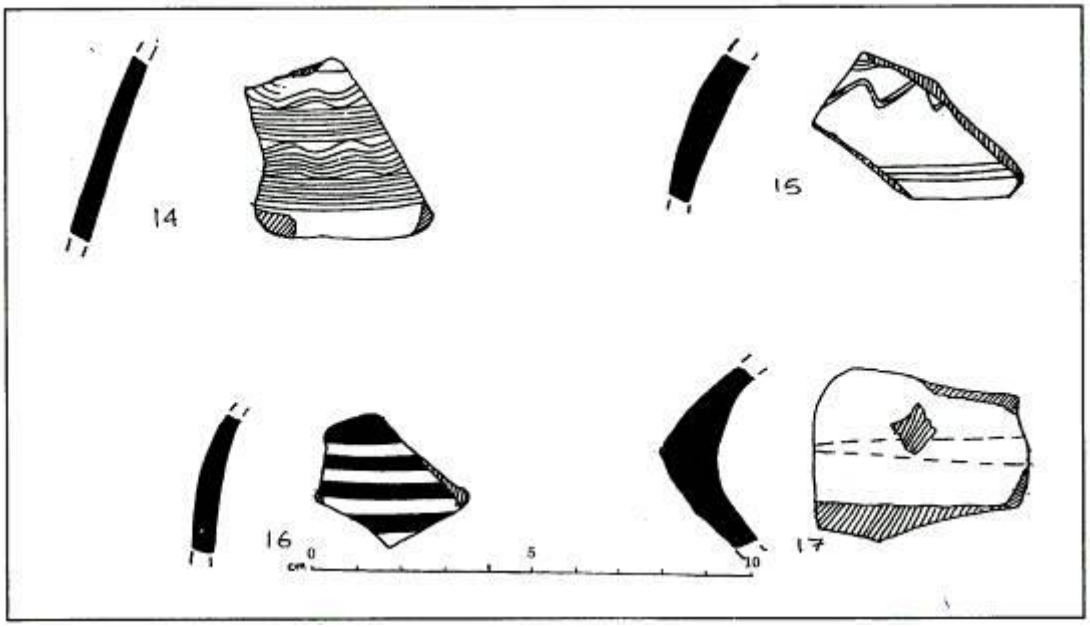


चित्र संख्या – 7–स, सीति की मृद्भाण्ड आकृति

22. **सुराना–(28°52′ अक्षांश, 77°24′ देशान्तर)** – यह मुरादनगर से लगभग 13 किमी० की दूरी पर जनपद गाजियाबाद में हिण्डन नदी के बायें किनारे पर अवस्थित है। यहाँ पर एक टीला है, जो लगभग 25 मीटर लम्बा, 20 मीटर चौड़ा तथा 4 मीटर ऊँचा है। टीले पर पीर की मजार भी है, जो कि लखौरी ईंटों की बनी है। स्थानीय निवासी से पवित्र मानकर इसी अराधना करते हैं। यहां राजपूत मन्दिर के पैनल भी मिले हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि यहां इस काल में एक मन्दिर रहा है।

23. **शाहबानपुर–(28°48′ अक्षांश, 77°23′ देशान्तर)** – यह जनपद गाजियाबाद के हिण्डन नदी के दाँये किनारे अवस्थित है। यहां पर एक टीला है, जो कृषि के कारण विलुप्तप्राय है, यह 50 मीटर लम्बा तथा केवल 1 मीटर चौड़ा है। स्थानीय निवासियों के अनुसार यहाँ से हड्डियों, बर्तन आदि निकलते रहते हैं। स्थानीय निवासियों ने बताया कि यहाँ से उन्हें पूर्व में बड़े आकार की ईंटे प्राप्त हुई हैं। जो इस बात का प्राय है कि यह एक प्राचीन पुरातात्विक स्थल है।

गाजियाबाद जनपद में पुरातात्विक अन्वेषण के उपरान्त कहा जा सकता है कि यहां हड़प्पा, ओ०सी०पी०, चित्रित धूसर मृदभाण्ड, कुषाण, गुप्त, राजपूत काल के विभिन्न पुरातात्विक स्थल स्थित है, जो इस जनपद को ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इस स्थलों को संरक्षित रखा जा सके क्योंकि गाजियाबाद जनपद तेजी से विकास कर रहा है और विकास की मात्रा में हमें अपनी धरोहरों को संरक्षित रखने की आवश्यकता है क्योंकि बहुत से स्थल इस विकास यात्रा में दम तोड़ते हुए दिखाई दिए हैं। अतः बचे हुए स्थलों को संरक्षित कर हम जनपद की ऐतिहासिक धरोहर को बचा सकते हैं।

## संदर्भ


1. अग्रवाल, वी. एस. 1953, इण्डिया एज नोन टू पाणिनी, लखनऊ।
2. अन्सारी, के.ए.ए., 1938, एएक्सपलोरेशन इन द यूनाईटेड प्रोविंस्स, आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 1935–36.
3. बाबू, बी. एस. आर. 1996, मण्डोली – ए लेट हडप्पन सैटिलमेंट इन दिल्ली, सी. मार्गबन्धु एण्ड के. एस. रामाचन्द्रन इस्पैक्ट्रम ऑफ इण्डिया कल्चर (प्रोफेसर एस. बी. देओ फेलिसिऐशन वोल्यूम), दिल्ली.
4. चक्रवर्ती, दिलीप के. 1995, द आर्कियोलॉजी, ऑफ एनशियन्ट इण्डियन सिरिज़, दिल्ली।
5. चक्रवर्ती, दिलीप के. 1988, ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन आर्कियोलॉजी फ्रॉम द विगनिंग टू 1947, दिल्ली।
6. चक्रवर्ती, दिलीप के. एण्ड एन० लाहिरी, 1987, ए प्रिलिमनरी रिपोर्ट ऑन द स्टोन एज ऑफ द यूनियन टैरिटरी ऑफ दिल्ली एण्ड हरियाणा, मैन एण्ड एन्वायरमेन्ट, 11.
7. चितलवाला, वाई.एम. 1979, हड़प्पन एन्ड पोस्ट हड़प्पन सैटलमेंट पैटर्न इन द राजकोट डिस्ट्रिक्ट ऑफ सौराष्ट्र, अग्रवाल, डी० पी० एन्ड डी० के० चक्रवर्ती, एसेज में इण्डियन प्रोटोहिस्ट्री, दिल्ली.
8. क्लार्क, डी० एल०, 1972, ए० प्रोविजनल मॉडल ऑफ एन आयरन एज सोसायटी एण्ड इट्स सैटलमेण्ट सिस्टम.
9. क्लार्क, ग्राहम, 1979, सर माटीमर एण्ड इण्डियन आर्कियोलॉजी, नई दिल्ली।
10. कनिंघम, एलेक्जेंडर, 1969 (रिप्रिंट), आर्कियोलौजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट्स, वाल्यूम, 1 –24, दिल्ली, वाराणसी।
11. दीक्षित, के०एन०, 1985, लेट हड़प्पन कल्चर – ए रिअप्रेजल, आर्कियोलोजिकल पर्सपेक्टिव ऑफ इण्डिया सिन्स इण्डिपेन्डेस, दिल्ली
12. दीक्षित, के०एन०, 1982, हड़प्पन सिविलाईजेशन, हुलास एण्ड द लेट हड़प्पन काम्पलेक्स इन्स वेस्टर्न उत्तर प्रदेश, हड़प्पन सिविलाईजेशन, जी० एल० पोसेल, दिल्ली
13. दीक्षित, के०एन०, 1980, डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ हड़प्पन वेयर इंज द मंगेटिक दोआब, आर०के० शर्मा, इण्डियन आर्कियोलॉजी, : न्यू पर्सपेक्टिव, दिल्ली
14. दीक्षित, के०एन०, 1979, द ऑकर कलर्ड वेयर सैटलमेन्टस इन द गंगा–यमुना दोआब, मैन एण्ड एनवायरमेण्ट, 5.
15. दीक्षित, के०एन०, 1979 बी, द लेट हड़प्पन कल्चरर्स इन इण्डिया, अग्रवाल डी० पी० एण्ड डी० के चक्रवर्ती, एसेज इन इण्डियन प्रोटोहिस्ट्री, दिल्ली.
16. दीक्षित, के०एन०, 1970, हड़प्पन कल्चर इन वेस्टर्न उत्तर प्रदेश, बुलेटिन ऑफ नेशनल म्यूजियम, 2.
17. घोष, ए० 1989, एनसाइक्लोपिडिया ऑफ इण्डियन आर्कियोलोजी : 2 वाल्यूम, दिल्ली।
18. लाहिरी, नयनजोत, उपेन्द्र सिंह एण्ड तारिका ओबेरॉय, 1996, प्रिलिमनरी, फील्ड रिपोर्ट ऑन द आर्कियोलॉजी ऑफ फरीदाबाद, मैन एण्ड एनवायरनमेण्ट, 21.
19. लाल, बी० बी०, 1954–55, एक्जिवेशन एट हस्तिनापुर एण्ड अदर एक्सप्लोरेशन एनशियन्ट इण्डिया, नं० 10–11, इण्डिया, 7.
20. लॉ, बी०सी०, 1967, हिस्टोरिकल ज्योग्राफी ऑफ एनशियन्ट इण्डिया, पेरिस.
21. शर्मा, डी० वी, वी० एन० प्रभाकर, आर तिवारी, एण्ड आर० के० श्रीवास्तव 1999–2000, हड़प्पन ज्वेलरी, होर्ड फ्राम माण्डी, पुरातत्व, 30.
22. शर्मा, कृष्ण कान्त, 2017, यमुना–हिण्डन दोआब का पुरातात्विक सर्वेक्षण, विश्वज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली।
23. सिंह, उपेन्द्र, 1999, एनशियन्ट दिल्ली, नई दिल्ली।

मण्डोला से प्राप्त मृद्भाण्ड

मण्डोला से प्राप्त मृद्भाण्ड

मण्डोला से टेराकोटा खिलौना (मुर्गा)

मण्डोला से प्राप्त विशेष पात्र

मण्डोला से प्राप्त पाषाण अवशेष

सुठारी से प्राप्त मृद्भाण्ड अवशेष